नेहरू बाल पुस्तकालय

गिजुभाई का गुलदस्ता-9

अमवा भैया
नीमवा भैया

गिजुभाई बधेका

अनुवाद, प्रस्तुति और चित्र

आबिद सुरती

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

मेंढ़क रह गया कुंवारा

सुनते हो महाबली जी

मुफ्त का माल

चमत्कार

बुढ़िया बोली ताता थैथै

अमवा भैया नीमवा भैया

मैं का करूं राम मुझे राक्षस मिल गया

दैया रे दैया

कलूटे काग देवा

सुनहरे बालों वाली लड़की

राजा का बैंड बाजा

मेंढ़क रह गया कुंवारा

एक था मेंढ़क और एक थी गिलहरी। दोनों दोस्त थे। साथ-साथ खेलते और मौज मनाते थे। न कोई चिंता, न कोई डर। एक रोज मेंढ़क को एक विचार आया। उसने कहा, 'गिलहरी बहन, मुझे ब्याह करना है।' गिलहरी बोली, 'यानी मेरे लिए भाभी लानी है। इसमें देर कैसी! चलो भैया, मैं तुम्हारा ब्याह अभी करा देती हूं। तुम चाहोगे तो किसी राजकुमारी से करवा दूंगी।'

मेंढ़क खुश हो गया। दोनों चल पड़े। चलते-चलते रास्ते में ताड़ का एक पेड़ दिखाई दिया। गिलहरी ने कहा, 'मेंढ़क भैया, तुम यहीं ठहरो। मैं जरा पेड़ पर चढ़ कर देखूं कि इस समय कितनी कन्याएं झील में स्नान कर रही हैं और उनमें से कौन-सी श्रेष्ठ है।' मेंढ़क बोला, 'बहन, अपने साथ मुझे भी ऊपर ले चलो न! मैं भी देखूं, श्रेष्ठ कन्या का नाक-नक्श कैसा होता है!'

तनिक सोच कर गिलहरी ने कहा, 'ठीक है, मेरी पीठ पर बैठ जाओ।' मेंढ़क फौरन उसकी पीठ पर सवार हो गया। गिलहरी उसे तेजी से ऊपर ले आई और एक पत्ते पर बैठा दिया। दूसरे पल गिलहरी फर्राटे से नीचे भी उतर गई। मेंढ़क आंखें फाड़े देखता रह गया। फिर सिर पीटते हुए बोला :

तिरिया से की दोस्ती, ताड़ पे डाला डेरा
ब्याह रहा बस सपना, बैंड बज गया मेरा।

सुनते हो महाबली जी

एक था सियार और एक थी उसकी जोरू। जब जोरू गर्भवती हुई तो उसने सियार से कहा, 'मेरे होने वाले टीनू-मीनू के बापू, मैं मां बनने वाली हूं। मेरे लिए कोई बढ़िया जगह खोज आओ।' दूसरे रोज सियार उसे शेर की गुफा के पास ले आया और बोला, 'इससे बढ़िया प्रसव-गृह हमें कहीं और नहीं मिलेगा।' जोरू ने हैरत जताते हुए कहा, 'लेकिन यह तो शेर का घर है। इसमें हम कैसे रह सकते हैं? शेर आया तो बच्चों के साथ हमें भी खा जाएगा।' सियार ने समझदारी की बात बताई, 'जो डरेगा सो मरेगा। तुम यहां रहो और निडर हो कर बच्चो जनो।'

जोरू ने गुफा में बच्चे दिए। नन्हे-मुन्ने सुंदर बच्चे! कुछ देर बाद शेर दूर से आता दिखाई दिया। सियार और उसकी जोरू सावधान हो गए। फिर दोनों ने मिल कर नौटंकी शुरू कर दी :

'अजी सुनती हो अनारकली जी'
'क्या कहते हो महाबली जी'
'ये बच्चे क्यों रो रहे हैं आज जी'
'शेरे-बबर का कलेवा करना है जी'

यह सुन कर शेर चौंका। तभी सियार बोला, 'देखो, शेर आ रहा है। मैं अभी उसका आमलेट बना कर आता हूं।' शेर ने मन ही मन सोचा, लगता है, मुझसे भी ताकतवर कोई बड़ा जानवर आ कर मेरी गुफा में घुस गया है।

उसके बच्चे मेरा कलेवा करना चाहते हैं। मुमकिन है वह राक्षस हो! भागो..

शेर दुम दबा कर भागा। रास्ते में उसे एक बंदर मिला। पूछा, 'शेरखान, यों गीदड़ की तरह कहां भागे जा रहे हो?' शेर बोला, 'अब क्या बताऊं? मेरी गुफा में कोई घुसा है। उसके बच्चे मेरा कलेवा करने के लिए बिलबिला रहे हैं। कोई बहुत बड़ा जानवर मालूम होता है। गैंडे से भी बड़ा। हाथी से भी बड़ा। मैं तो अपनी जान बचा कर भाग आया हूं।'

बंदर ने कहा, 'बकवास, सब बकवास। भला जंगल के राजा से बड़ा और कौन हो सकता है! चलो मेरे साथ।' शेर डरपोक था, बुदबुदाया, 'नहीं-नहीं, मुझे नहीं जाना।' बंदर ने कहा, 'डरो मत। तुम्हारी गुफा में सियारिन ने बच्चे दिए हैं। मुझे मालूम है।'

शेर बोला, 'तब तू ही जा।' बंदर ने उपाय सुझाया, 'तुम्हें यकीन न हो तो आओ, हम अपनी पूंछें एक दूसरे से बांध लेते हैं।' अब शेर को तसल्ली हुई। दोनों ने अपनी-अपनी पूंछें एक-दूसरे के साथ बांध
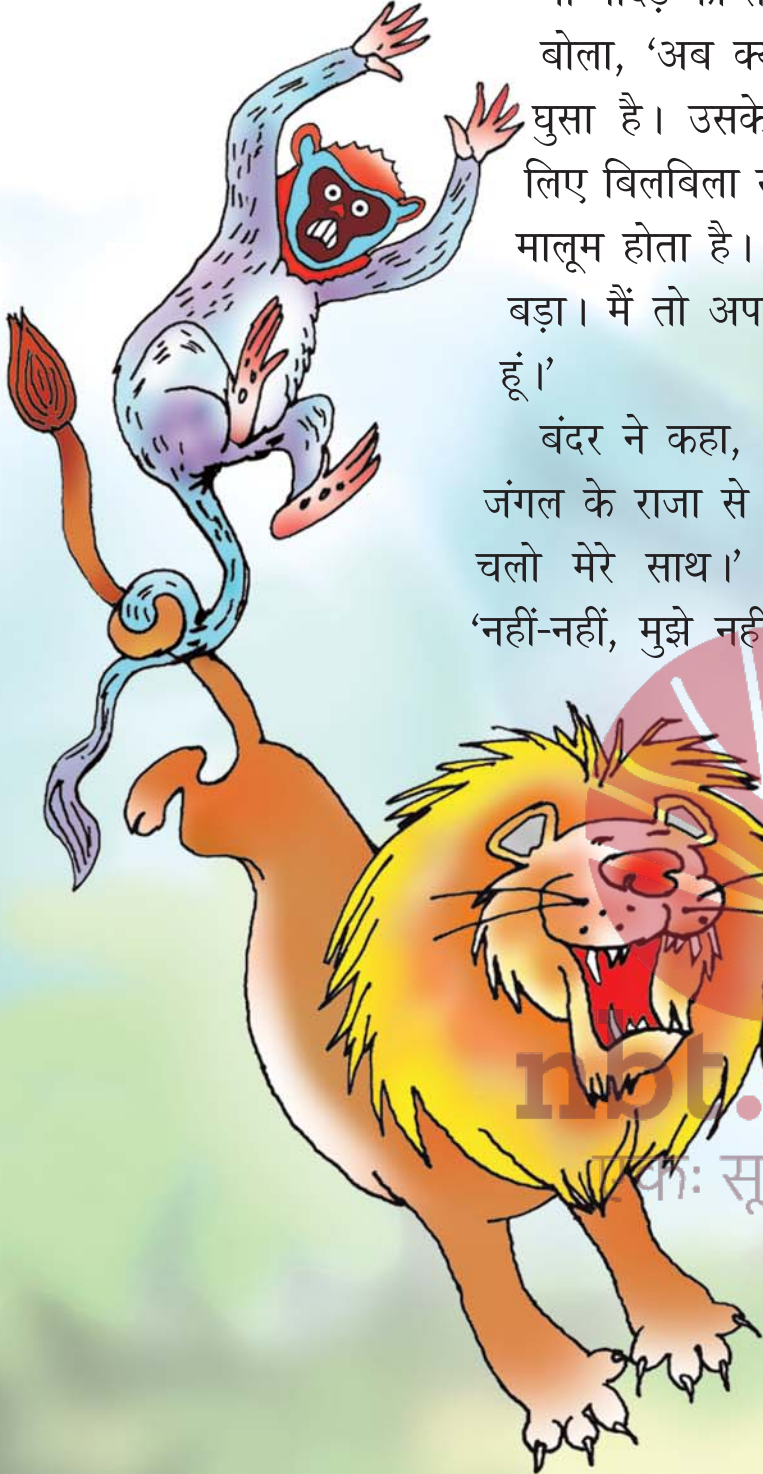
लीं।' अब दोनों साथ-साथ गुफा की ओर चले। दूर से ही शेर और बंदर को आते देख सियार और सियारिन ने मिल कर फिर से नौटंकी शुरू कर दी :

'अजी सुनती हो अनारकली जी'
'क्या कहते हो महाबली जी'
'ये बच्चे क्यों रो रहे हैं आज जी'
'शेरे-बबर का कलेवा करना है जी'

अब सियार ऊंची आवाज में गाने लगा :

दोस्त बंदर आ रहा है
शेर को साथ ला रहा हैं

शेर चौंका। उसने सोचा, यह बंदर मिला हुआ है। मुझे ललचा-फुसला कर मेरा आमलेट बनाना चाहता है। मैं तो बेमौत मारा जाऊंगा। शेर पलट कर देखे बिना ही भागा। बंदर उसके पीछे-पीछे घिसटता चला। वह बेचारा क्या करता! उसने शेर की पूंछ के साथ अपनी पूंछ बांध रखी थी। आगे-आगे शेर और पीछे-पीछे बंदर। दोनों दूर, बहुत दूर चले गए। सियार और उसकी जोरू गुफा में अब ठाठ से रहते हैं और मौज करते हैं।

मुफ्त का माल

एक था पंडित और एक थी पंडितानी। दोनों अपने-अपने फन में पूरे उस्ताद, बल्कि नहले पर दहला थे। एक रोज पंडित के एक जजमान के घर ब्याह का अवसर आया। उसने सोचा ब्याह में दक्षिणा तो मिलेगी ही, थोड़ा शुद्ध घी भी मिल जाए तो आनंद-मंगल हो जाए। लड्डू बना कर महीना भर खा सकेंगे। उसने पंडितानी से कहा, 'सुनती हो, भागवान! पकोड़ीमल सेठ के घर उनकी बेटी का ब्याह कराने जा रहा हूं। तुम साथ चलो। विवाह का मौका है, सेठजी के घर दूध और घी गंगा बहती होगी। हमें थोड़ा घी मिल जाए, तो मजा आ जाए।'

पंडितानी बोली, 'आपका विचार तो नेक है, लेकिन इतने सारे लोगों के बीच हम घी कैसे चुरा सकेंगे?' पंडित ने कहा, 'यह चिंता मेरी है। मैं ब्याह कराने मंडप में बैठूं, तब तुम वैसा ही करना जैसा मैं कहूं।'

थोड़ी देर बाद दोनों सेठ पकोड़ीमल की हवेली पर पहुंचे। ब्याह का समय हुआ। पंडित मंत्र पढ़ने लगा। घर के सभी लोग मंडप में आ कर बैठ गए। औरतों ने गीत गाना शुरू कर दिया। अंदर रसोईघर में कोई नहीं रहा। पंडित ने मौका पा कर हवन के मंत्रों की बीच एक मंत्र अपना भी घुसेड़ दिया :

घी चुराओ घी चुराओ स्वाहा
घी उड़ाओ घी उड़ाओ स्वाहा

यह सुन पंडितानी महिलाओं के बीच से सटक कर रसोईघर में पहुंची। लेकिन घी चुराने के लिए उसे कोई बरतन नहीं मिला, तो वह मंडप में वापस लौट आई। पंडित सोच में पड़ गया। तभी पंडितानी ने अपना करिश्मा दिखाया। वह गीत गा रही महिलाओं के बीच बैठ कर गाने लगी :

कहना बड़ा आसान है जी
खाली हाथ चुराना मुश्किल
कोई कटोरा ना कोई कटोरी
मत कहियो रे मुझको बुजदिल

पंडित ने सुना और वह फिर से मंत्र बोलने लगा :

घी चुराओ घी चुराओ स्वाहा
घी उड़ाओ घी उड़ाओ स्वाहा
बांस पर गगरी सुंदर है स्वाहा
घी चुराओ घी चुराओ स्वाहा

बात सही थी। रसोईघर के कोने में बांस का एक टुकड़ा खड़ा था। उस पर उलटी गगरी रखी हुई थी। लेकिन वह नई थी। उसमें घी भरने से आधा घी वह गगरी ही पी जाएगी... यह सोच उसने फिर गाना शुरू कर दिया :

नई है गगरी पी जाएगी घी
अकल हो तो ये समझो जी
कहना बड़ा आसान लेकिन
करना बड़ा है मुश्किल जी

पंडित तिलमिला कर खुद से बोला, 'गगरी घी पी भी गई तो तेरे बाप का क्या जाएगा? घी तो सेठजी का है।' घरवाली को समझाने के लिए

पंडित ने फिर से मंत्र बोलना शुरू किया :

घी चुराओ घी चुराओ स्वाहा
घी उड़ाओ घी उड़ाओ स्वाहा
आधा घी गगरी पीएगी स्वाहा
बाकी आधा हम पीएंगे स्वाहा

काम बन गया। पंडितानी घी चुरा कर घर पहुंची और केसरिया लड्डू बनाए। फिर दोनों ने जम कर खाए। नतीजा क्या निकला? दूसरे रोज दोनों के पेट में दर्द शुरू हो गया। दर्द में तड़पते हुए पंडित ने कहा, 'भागवान, चोरी का माल किसी को हजम नहीं होता। हमें कैसे होगा?'

चमत्कार

एक था बनिया। उसका एक लड़का था। लाड़-प्यार में पला था। उसे चेचक निकली। पास-पड़ोस के लोग देखने आए। सबने एक ही बात कही, 'सेठजी, चेचक का रोग खतरनाक होता है। देवा मां की मनौती मान लो। वरना... न करे नारायण, आपका इकलौता बेटा कहीं दम न तोड़ दे! पुत्तर है तो सब कुछ है।' बात बनिये के गले से नहीं उतरी। फिर भी लोक-लाज के कारण उसने मन्नत मानी, 'है शीतलामाता, मेरा बेटा ठीक हो जाएगा तो मैं एक भैंसा चढ़ाऊंगा।' गांववाले खुश हो गए। बनिये की वाह-वाही होने लगी। सब कहने लगे, 'हमारे सेठजी बड़े चतुर हैं। बात इशारे में समझ लेते हैं।'

थोड़े दिनों में लड़का सेहतमंद हो गया। लेकिन मन्नत पूरी करने की बात बनिया टाल गया। यह जान कर मुखिया ने कहा, 'सेठजी, आपका बेटा मनौती के प्रताप से जी गया। अब देर करना अच्छा नहीं। देवी-देवता का कर्ज तो सबसे पहले चुका देना चाहिए। अगर भैंसे की बलि नहीं चढ़ाई तो आपका बेटा फिर से मुश्किल में पड़ सकता है। फिर मत कहना कि हमने आपको नहीं चेताया था।' बनिये ने सोचा, अब मन्नत तो पूरी करनी ही पड़ेगी, वरना गांव वाले मेरा जीना हराम कर देंगे।

बनिये के पड़ोस में एक भिश्ती रहता था। उसके एक भैंसा भी था। रात में वह भैंसे को आंगन में बांधा करता था। भिश्ती और बनिये का आंगन अगल-बगल था। बनिये ने सोचा, आखिर पड़ोसी का ये भैंसा कब काम आएगा। तड़के उठ कर उसने भैंसे को खोला। गांव के बाहर

शीतलामाता की जो शिला गाड़ी गई थी, उस पर भैंसे की बलि चढ़ाने के बजाय उसी के साथ भैंसे को बांध दिया।

सुबह जब भिश्ती अपने भैंसे को खोलने खूंटे के पास आया तो देखा, भैंसा गायब। उसने सारे गांव में खोजा, लेकिन वह कहीं भी नहीं मिला। अब भिश्ती गांव के बाहर चला। उसे भैंसे पर बड़ा क्रोध आ रहा था। तभी उसे अपना भैंसा शीतलामाता की शिला से बंधा दिखाई पड़ा। भिश्ती चिढ़ा हुआ तो था ही, उसने सबसे पहले भैंसे को जोर से एक डंडा फटकारा। भैंसा उछला और दौड़ने लगा। आगे-आगे भैंसा और पीछे-पीछे घिटसती हुई शिला, दोनों घर तक आ पहुंचे। वहीं बनिये के घर के आगे शिला खुल कर गिर पड़ी।

बनिया हंस कर बोला, 'चमत्कार...शीतलामाता ने भैंसे को तो जिंदा कर दिया, खुद चल कर हमारे द्वार दर्शन देने आ गईं।' फिर उसने शिला की शोभयात्रा निकाली। पालकी में शीतलामाता को बैठाया। आगे-आगे ढोल और शहनाई बज रही थी। इसी के साथ बनिया गाता जा रहा था :

सच और झूठ तो भगवान जाने
शीतलामाता हमारे घर पधारे

बुढ़िया बोली ताता थैथै

एक थी बुढ़िया। उसके चार बेटे थे। एक का नाम था अमर, दूसरे का तमर, तीसरे का समर और चौथे का चमर। एक रोज गांव में नौटंकीवाले नया खेल लेकर आए। बेटों ने कहा, 'मां-मां, हम नौटंकी देखने जाएं?' बुढ़िया बोली, 'जाओ, लेकिन जल्द घर लौट आना। आजकल के चोर-चकारों का कोई भरोसा नहीं। बड़े-बूढ़ों पर भी तरस नहीं खाते। सेंध लगाने के लिए वे हमेशा ताक में रहते हैं।'

इधर लड़के नौटंकी देखने गए, उधर घर में चोर घुसे। दो चोरों ने जेवर-नकद समेटना शुरू किया। तीसरे ने बैल खोले। चौथे ने भैंस ले ली। पांचवें ने घर में जो भी चीज हाथ लगी, समेट ली। तभी बुढ़िया जाग उठी। बोली, 'अरे ओ, गीदड़ की औलाद! मेरे चारों बेटे नौटंकी देख कर लौट ही रहे होंगे। तुम कहां छिपोगे? वे तुम्हें पाताल से भी खोज कर तुम्हारी खटिया खड़ी कर देंगे। इसलिए तुम्हारी भलाई इसी में है कि जो चीज जहां से उठाई है, वहां ठीक से रख दो।' सुन कर एक चोर ने कहा, 'क्यों न हम इस बुढ़िया को भी अपने साथ ले चलें? न रहेगा बांस, न बजेगी बांसुरी। कौन हमारा पीछा करेगा?'

बात समझदारी की थी। चोरों ने बुढ़िया को बांध कर एक बोरे में डाल दिया। एक चोर ने बोरा अपने सिर पर उठा लिया। फिर अपने साथियों से कहा, 'तुम सब अड्डे की तरफ चलो। मैं बुढ़िय को ले कर नौटंकी में

जाऊंगा और एक खेल अपना भी दिखाऊंगा, ताकि बुढ़िया के बेटे वहीं चिपके रहें। जब तक मेरा खेल खत्म होगा, तब तक तुम सब अड्डे पर पहुंच जाओगे। फिर भले ही बुढ़िया के लड़के घर पहुंचे।'

बाकी चोर आगे बढ़ गए। बोरे वाला चोर नौटंकी के तंबू में पहुंचा और खेल में शामिल हो गया। सिर पर बोरा लिए नटों के साथ वह भी नाचने-कूदने लगा। दर्शकों ने सोचा...यह कोई सधा हुआ खिलाड़ी मालूम पड़ता है! बुढ़िया के चारों बेटे बैंच पर बैठे थे, सो वे वहीं बैठे रहे। एक बोला, 'यह खेल तो बड़ा ही मजेदार है। पूरा देखना पड़ेगा।' दूसरे ने याद दिलाया, 'मां हमारी बाट जोह रही होगी।' तीसरे ने कहा, 'थोड़ी देर और सही।' चौथे ने उसकी बात मानते हुए कहा, 'ऐसे चटपटे खेल गांव में बार-बार थोड़े ही आते हैं।' चोर-खिलाड़ी सिर पर बोरा लिए कमर मटका कर नाच रहा था और तालियां बजा कर सबको हंसा रहा था। इसी बीच बुढ़िया ने बोरे में से झांक कर बैंच पर बैठे बेटों को देखा और तान छेड़ दीः

उठो रे बेटा अमर-तमर ताता थैथै
जागो रे लाल समर-चमर ताता थैथै
जेवर गये ढोर डंगर गये ताता थैथै
अब तो समझो कसो कमर ताता थैथै

मां की आवाज सुन चारों बेटे चौंक गए। खड़े हो कर चारों ओर देखने लगे। मां को ढूंढ़ने लगे। चोर-खिलाड़ी घबरा गया। मन ही मन बोला... सत्यानाश। यह बुढ़िया है या आफत की पुड़िया। इसने तो बाजी ही चौपट कर दी। लेकिन अभी भी समय है। अभी भी मेरे बाजुओं में जोर और दम में दम है। बुढ़िया की आवाज दबाने के लिए उसने जोर-जोर से चिल्लाना शुरू कर दिया :

बैठो रे बेटा अमर-तमर ताता थैथै
छोड़ो रे चिंता समर-चमर ताता थैथै
कहत कबीरा धन-दौलत है मोह-माया
काहे को कसते हो कमर ताता थैथै

इतना कह चोर-खिलाड़ी अपने सिर का बोझ मंच पर फेंक चंपत हो गया। तुरंत सब लोग बोरे के आसपास इकट्ठा हो गए। बोरा खुला तो अंदर से बुढ़िया निकली। उसने चारों का किस्सा सुनाया। सुनते ही चारों भाई चोरों की तलाश में दौड़ गए। उन्होंने चोरों का अड्डा ढूंढ़ लिया और जम कर उनकी ठुकाई की। फिर अपना सारा माल बरामद करके घर ले आए।
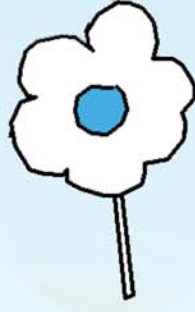
अमवा भैया नीमवा भैया

एक था राजा। उसकी सात रानियां थीं। उनमें से छह उसे प्रिय थीं। एक अप्रिय। प्रिय रानियों के रहने के लिए बड़ी-बड़ी हवेलियां थीं। भीतर शानदार कमरे थे। छतों से झाड़फानूस झूल रहे थे। नौकर-चाकरों की भी कमी न थी। लेकिन अप्रिय रानी के रहने के लिए टूटा-फूटा-सा सिर्फ एक झोंपड़ा था। उसमें मिट्टी के कुछ बर्तन और एक बूढ़ी दासी थी।

अप्रिय रानी के दुखों की कोई सीमा नहीं थी। दिन काटे नहीं कटते थे। वह रो-रो कर रातें गुजारती थी। एक रोज उसने सोचा, इस तरह आंसू बहाने से अच्छा है कि मैं कोई काम करूं ताकि मन लगा रहे और दिन भी चैन से गुजर जाएं। उसने तुरंत बूढ़ी दासी से कहा, 'माई, चौक से मेरे लिए रंगीन धागे ले आओ। मुझे चुनरी काढ़नी है।'

बूढ़ी दासी तरह-तरह के रंगबिरंगे धागे ले आई। रानी ने चुनरी काढ़नी शुरू की। वह दिन-भर इसी काम में लगी रहती। थक जाने पर रात में नींद भी अच्छी आती। उसे पता ही नहीं चलता कि कब दिन बीता और कब रात खत्म हुई। चुनरी में रानी ने छोटे-छोटे प्यारे-प्यारे मोर-मोरनी, तोता-मैना जैसे कई परिंदे बनाए। इंद्रधनुषी फूल सजाए। हाशिए पर हरी-हरी बेल बनाई। पूरा एक साल लगा चुनरी तैयार करने में। रानी ने उसे अपने झोंपड़े के दरवाजे पर परदे की तरह टांग दिया।

एक रोज राजा हाथी पर सवार हो कर उसी रास्ते से गुजरा। यकायक हाथी के कदम रुक गए। रंगीन चित्रों वाली चुनरी देख कर राजा दंग रह

गया। उसने सोचा, भला इतनी बढ़िया चुनरी किसने काढ़ी होगी? ऐसी रंगबिरंगी डिजाइन तो मैंने पहले कभी नहीं देखी! उसने तुरंत सिपाही से कहा, 'पता लगाओ, इस झोंपड़े में कौन रहता है।' राजा महल में पहुंचा तब तक उसे पता चल गया कि वह झोंपड़ा अप्रिय रानी का है और चुनरी भी उसी ने काढ़ी है।

वाह चुनरी कमाल चुनरी
दिल में करे धमाल चुनरी

राजा उस पर प्रसन्न हो गया। अब वह रोजाना उसके घर जाने लगा। कभी-कभी वह उसके साथ भोजन भी कर लेता। धीरे-धीरे अपनी चहेती रानियों को भूल ही गया। नौ महीनों बाद अप्रिय रानी के मां बनने का समय आ पहुंचा। बाकी रानियों ने सोचा, इसके बच्चे को मरवा डालना चाहिए वरना वह बड़ा हो कर राजा का वारिस बनेगा और हमारे बेटे मक्खियां मारेंगे। उन छहों रानियों ने मिल कर षड्यंत्र रचा और दाई को बुला कर कहा, 'सुनो, अगर सातवीं रानी के लड़का पैदा हो, तो तुम उसे जिंदा ही बगीचे में गाड़ देना। हम तुम्हें खुश कर देंगे।'

सातवीं रानी को सचमुच लड़का पैदा हुआ। चांद-सा मुखड़ा, कान्हा-सी मधुर मुस्कान। दाई ने उसे चुपके से उठा कर बगीचे में गाड़ दिया। यही नहीं, एक बड़ा-सा पत्थर ला कर रानी के बगल में रख दिया। राजा ने पूछा, 'लड़का या लड़की?' दाई ने कहा, 'पत्थर'। राजा बेवकूफ था। उसने मान लिया कि रानी की कोख से पत्थर ही पैदा हुआ होगा।

एक साल और बीत गया। रानी को एक और बेटा हुआ। पहले से अधिक सुंदर। कान्हा से घुंघराले बालों वाला। लेकिन दाई उसे भी बगीचे में गाड़ आई। थोड़ी देर बाद राजा आया। उसने उत्सुकता से पूछा, 'लड़का

या लड़की?' जवाब वही मिला 'पत्थर'। समय के साथ रानी ने छह राजकुमारों और एक राजकुमारी को जन्म दिया। सब राजकुमार एक से बढ़ कर एक। राजकुमारी इंद्र की अप्सरा समान। लेकिन दाई के दिल में दया कैसी। वह तो एक के बाद एक सबको बगीचे में गाड़ती गई।

साल-भर बाद बगीचे में सात पेड़ उगे। छह आम और नीम के और एक इलायची का। छह भाइयों के और एक बहन का। एक रोज सवेरे-सवेरे माली बगीचे के सफाई कर रहा था। तभी उसकी झाड़ू इलायची के पेड़ को छू गई। पेड़ डोलने लगा।
डोलते-डोलते कहने लगा :

ओ रे अमवा भैया
रे नीमवा भैया
कौन डुलावे
इलायची बहना को
दैया

आम का पेड़ बोला :

प्यारी-प्यारी हमारी
गुड़िया रानी
ये है माली हमको
पिलावे पानी
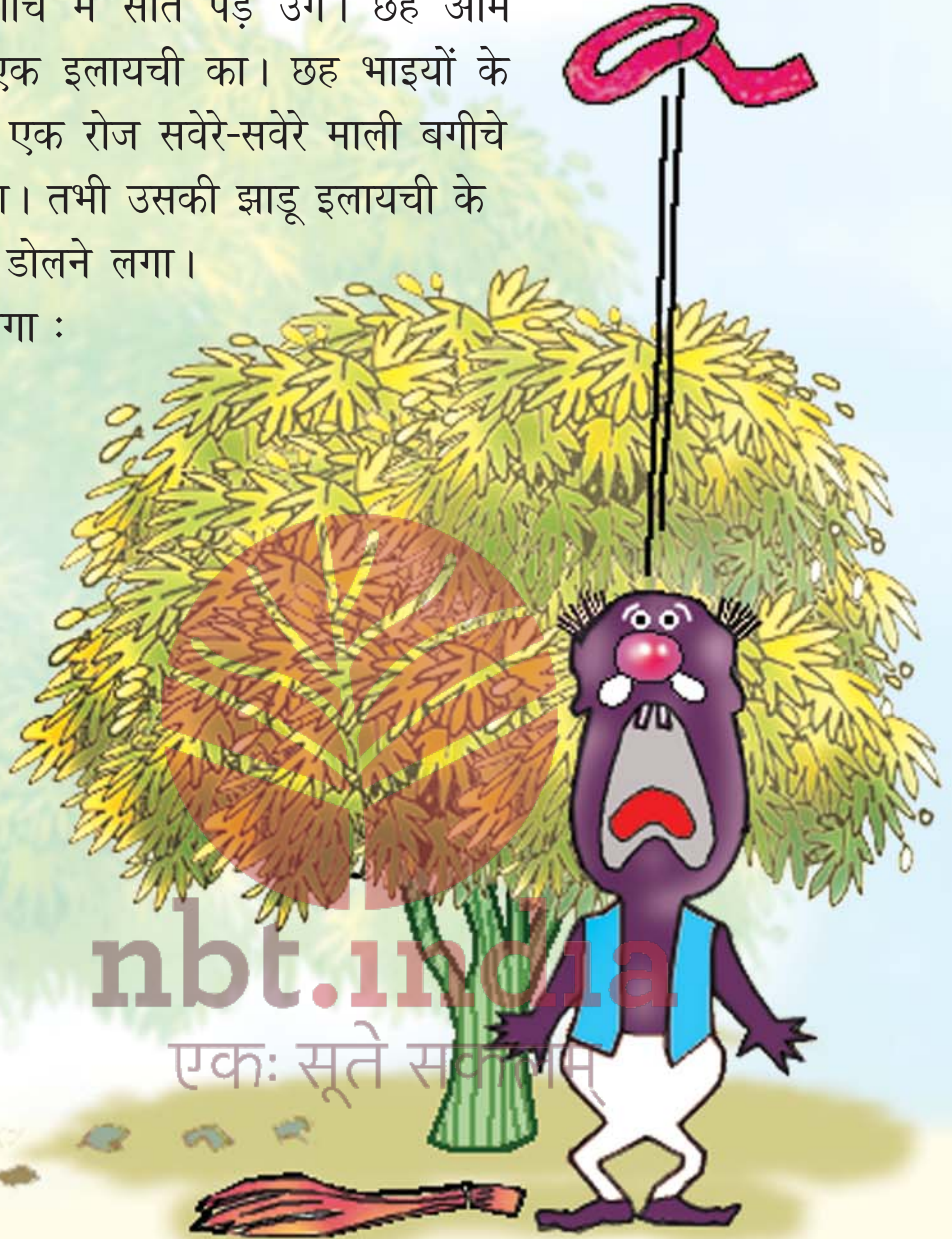
यह सब सुन कर माली हैरान रह गया। होश में आया तो दौड़ कर चौकीदार के पास पहुंचा। फिर बोला, ‘गजब हो गया। पेड़ आपस में बातें कर रहे हैं। यकीन न हो तो खुद चल कर सुन लो।’ जैसे ही चौकीदार ने इलायची के पेड़ को छुआ, पेड़ बोल उठा :

ओ रे अमवा भैया रे नीमवा भैया
कौन डुलावे इलायची बहना को दैया

इस बार नीम बोला :

प्यारी-प्यारी हमारी गुड़िया रानी
ये है चौकीदार करे हमारी रखवाली

चौकीदार ने सोचा, ये तो सचमुच चमत्कार है। उसने जा कर थानेदार से कहा। थानेदार के साथ भी वहीं हुआ। थानेदार ने दीवान से कहा। दीवान ने राजा से। राजा खुद बगीचे में आया। इलायची के पेड़ को हिला कर देखा। तभी आवाज उभरी :

ओ रे अमवा भैया रे नीमवा भैया
कौन डुलावे इलायची बहना को दैया

सुन कर आम हंसा। फिर बोला :

प्यारी-प्यारी हमारी गुड़िया रानी
यह तो है हमारा पिताश्री अज्ञानी

सुनते ही राजा अचंभे में पड़ गया। तभी वहां छहों रानियां आ पहुंची। एक रानी ने सच्चाई जानने के लिए इलायची के पेड़ को हिलाया। तुरंत पेड़ बोला :

ओ रे अमवा भैया रे नीमवा भैया
कौन डुलावे इलायची बहना को दैया

इसका जवाब नीम ने दिया :

प्यारी-प्यारी हमारी गुड़िया रानी
यह तो है इस जग की बैरिन न्यारी

अब तक वहां सातवीं रानी आ पहुंची थी। अब बारी भी उसी की थी। उसने हौले से इलायची के पेड़ को छुआ। तुरंत आवाज उठी :

ओ रे अमवा भैया रे नीमवा भैया
कौन डुलावे इलायची बहना को दैया

आम के पेड़ ने खुशी-खुशी जवाब दिया :

प्यारी-प्यारी हमारी गुड़िया रानी
यह तो है मम्मी परियों की रानी

सातवीं रानी एकबारगी चहक उठी, 'अरे, यह तो मेरी संतान बोल रही है!' राजा ने सोचा...आखिर बात क्या है? इसका राज क्या है?

उसने दाई को बुलवाया और डांट कर कहा, 'अगर सारी बात सच-सच नहीं बताओगी तो मार-मार कर तुम्हारा कचूमर बना दूंगा।' दाई ने सब कुछ सच-सच बता दिया। तभी असली चमत्कार हुआ। आम और नीम के पेड़ों में से भाई निकले और इलायची के पेड़ में से बहन निकली। सबकी खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा। दूध का दूध और पानी का पानी सामने आ गया था। राजा ने उसी दिन छहों रानियों का सिर मुंडवा कर ऊपर चूना पुतवाया और नगर से बाहर खदेड़ दिया। फिर राजा ने सातवीं रानी को बच्चों सहित शानदार हवेली में बसाया।
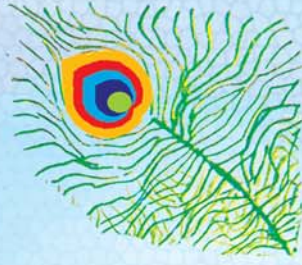
मैं क्या करूं राम मुझे राक्षस मिल गया

एक थी राजकुमारी। नाम था सोनचिरैया। उसका एक भाई था। भाई-बहन रोजाना झील पर खेलने जाते। वहां बहुत-से मोर रहते थे। सोनचिरैया को मोर बहुत प्यारे लगते थे। वह मोरों को रोज नहलाती, दाना खिलाती और मौज कराती। मोर उसके लिए ठुमक-ठुमक नाचते, टीटू-टीटू गाते और पंख फैला कर अपनी सुंदरता का प्रदर्शन करते।

झील-तले एक महल था। महल में एक राक्षस रहता था। वह सोनचिरैया को चाहता था। उससे ब्याह करने के सपने देखता था। एक रोज उसने सोनचिरैया से बहुत मिन्नतें कीं, लेकिन वह बोली, 'भला मैं राक्षस से ब्याह कैसे कर सकती हूं?'

सोनचिरैया राजा की बेटी थी। बड़ी खूबसूरत थी। ऐसी सुंदर राजकुमारी सपनों के किसी शहजादे से रिश्ता जोड़ सकती है, राक्षस से नहीं। मगर राक्षस भी इतनी आसानी से हार मानने वाला नहीं था। उसने सोनचिरैया के भाई को फुसला कर जुआ खेलने बैठाया। सोनचिरैया ने उसे बहुत समझाया, लेकिन वह नहीं माना। खेलते-खेलते वह रुपए हार गया, घोड़ा और तलवार हार गया। अंत में अपनी बहन को दांव पर लगा दिया और उसे भी खो बैठा। सोनचिरैया फूट-फूट कर रोने लगी। भाई भी पछताने लगा। पर अब वह कर ही क्या सकता था? सोनचिरैया को उदास देख राक्षस ने दूसरी चाल चली। बोला, 'सोन, मुझसे ब्याह न करना हो तो हर्ज नहीं। मैं इस झील का एक कमल बन जाता हूं। तुम मुझे सिर्फ छू

लेना। मैं मान लूंगा कि मैं कुंवारा नहीं हूं। सोनचिरैया खुश हो गई। सिर्फ छूने-भर से राक्षस से पिंड छूटता हो तो इससे बढ़ कर आनंद की बात और क्या हो सकती है?

तभी राक्षस पानी में उतरा और कमल का फूल बन कर तैरने लगा। सोनचिरैया उसे छूने जाती। पानी टखनों तक पहुंचा, लेकिन कमल को वह छू नहीं सकी। उसने भाई से कहा :

पानी आ पहुंचा है टखनों तक भैया मेरे
फिर भी फूल खिसकता जाए वीरा मेरे

भाई बोला, 'बहना, थोड़ा और आगे बढ़ जाओ। सोनचिरैया फिर आगे बड़ी। कमल का फूल फिर से खिसक गया। सोनचिरैया ने कहा :

पानी आ पहुंचा है घुटनों तक भैया मेरे
फिर भी फूल खिसकता जाए वीरा मेरे

भाई बोला, 'इसमें चिंता की क्या बात है?' तुम भी थोड़ा और आगे बढ़ जाओ।' सोनचिरैया साहस करके चार कदम और चली। कमल का फूल चार कदम और खिसका। वह बोली :

पानी आ पहुंचा है कमर तक भैया मेरे
फिर भी फूल खिसकता जाए वीरा मेरे

भाई ने कहा, 'डरो मत। कमल हाथ-भर की दूरी पर है। दो कदम और बढ़ाओ और छू लो।' भाई के शब्दों पर भरोसा करके वह इस बार दो के बजाय तीन कदम आगे बढ़ी। फूल भी तीन कदम पीछे हट गया। वह रोते हुए बोली :

पानी आ पहुंचा है गले तक भैया मेरे
फिर भी फूल खिसकता जाए वीरा मेरे

भाई ने कहा, 'बहना, तुम इतनी ढीली-ढाली कब से हो गई? अब तो सिर्फ एक कदम ही बढ़ाने की जरूरत है। भगवान का नाम ले कर हाथ भी बढ़ा।' सोनचिरैया ने वैसा ही किया और पानी सिर के ऊपर आ गया। तभी कमल के फूल से राक्षस प्रकट हुआ और उसकी कलाई

थाम कर उसे तले पर ले गया। वहां पानी के नीचे एक महल था। राक्षस सोनचिरैया को उसी महल में ले आया। महल शानदार था। खाने-पीने की कोई कमी नहीं थी। लेकिन सोनचिरैया तो पल-पल गिन रही थी। दिन-रात काटे नहीं कटते थे। वह अपने भाई और मोर दोस्तों को याद कर रोती रही। एक रोज वह महल की छत पर बैठी आंसू बहा रही थी कि अचानक उसे एक मधुर आवाज सुनाई दी। झील के किनारे से कोई पुकार रहा था :

सोन बहना रे सोन बहना रे
रोज हमको तू नहलाती थी
कभी शीतल जल पिलाती थी
कभी हलवा भी खिलाती थी
अब तो भाभी लानतें बरसाएं
घर जाएं तो भूखे लौटाएं
लाड़ करें तो जूते चलाएं
हम क्या करें जी किधर जाएं

सोनचिरैया चौंक कर बोली, 'यह तो मेरे प्यारे-प्यारे मोर की आवाज है।' अब वह अपने उदास स्वर में कहने लगी :
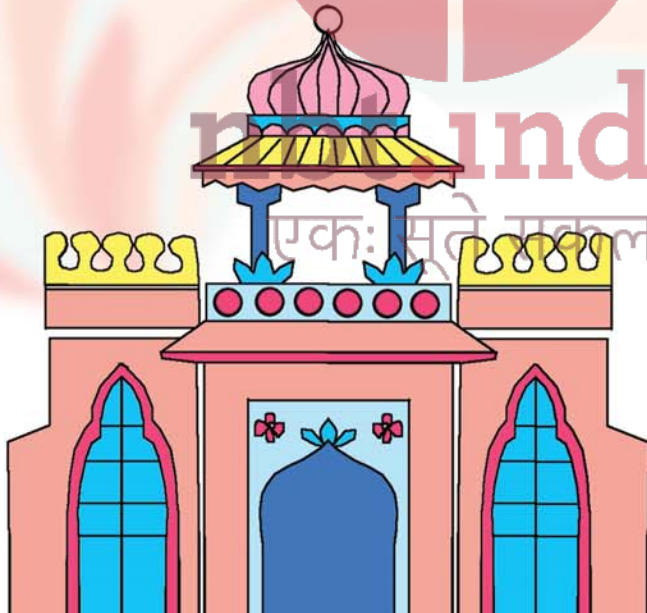
मैं का करूं राम मुझे राक्षस मिल गया
राक्षस बड़ा है जालिम मुझसे हल चलवाता है
पग-पग ठोकर खाती हूं, तो कोड़े भी बरसाता है
मैं का करूं राम मुझे राक्षस मिल गया

मोर बोला, 'यह तो हमारी प्यारी-प्यारी सोन दीदी है। लगता है, उसके दिन भी बुरे चल रहे हैं।' फिर मोर राजा के पास पहुंचा और सारा किस्सा सुनाया। राजा भड़क उठा, 'क्या...मेरी बिटिया को राक्षस उठा ले गया है?' उसने सिपाहियों से तुरंत कहा, 'जाओ झील का सारा पानी कुएं में डाल दो। राक्षस को गिरफ्तार करो।' इस काम में सारी फौज जुट गई। कुछ देर में झील खाली हो गई। राक्षस गिरफ्तार हो गया। राजा ने सबसे पहले उस दुष्ट को सौ कोड़े मारे। फिर तड़ीपार कर दिया। यही नहीं, उसका महल भी तुड़वा डाला। सोनचिरैया खुश हो गई। मोरों से गले मिल कर वह रोई। लेकिन वे आंसू खुशी के थे।

दैया रे दैया

एक थी बुढ़िया। वह बड़ी गरीब थी। पड़ोस के काम करके वह बड़ी मुश्किल से गुजर-बसर कर पाती थी। ऐसे में ईद का त्यौहार आया। मुसलमानों के घरों में सिवइयां बनने लगीं। यह देख बुढ़िया के दो बेटों ने कहा, 'मांजी-मांजी, हम भी सिवइयां खाएंगे।' घर में थोड़े गेहूं थे। बुढ़िया ने थोड़ी सिवइयां बनाईं। फिर घी-गुड़ खरीदने बाजार जाने से पहले बेटों को चेतावनी दी, 'अभी सिवइयों में घी-गुड़ डालना बाकी है। फिर हम कुलदेव को नैवेद्य चढ़ाएंगे। उसके बाद ही सब खाएंगे।'

लड़के मां का इंतजार करते हुए सिवइयों की पतीली के पास बैठ गए। तभी गली का एक कुत्ता आया और अपनी पूंछ हिलाता हुआ पतीली में रखी सिवइयां खाने लगा। बच्चों ने सोचा...मां ने जिस कुलदेव का जिक्र किया था, शायद वह यही होगा। लेकिन मां ने तो कहा था कि पहले घी-गुड़ डालेंगे, फिर खाएंगे। यह तो अभी से खाने लगा है। सो वे बोले :

दैया रे दैया, दैया रे दैया
कुलदेवा खाए सिवइयां
कुलदेवा दुम हिलाएं
कुलदेवा कान हिलाएं
जरा रुको भी कुलदेवा
मां हमारी घी-गुड़ लाए

दैया रे दैया, दैरा रे दैया
कुलदेवा खाएं सिवइयां

कुत्ता तो पतीली साफ कर चंपत हो गया। थोड़ी देर के बाद मां ने आ कर पतीली देखी तो वह खाली थी। उसने सोचा..बच्चों का धीरज छूट गया होगा। वह कुछ कहे, बच्चों को डांटे, इससे पहले एक बेटे ने बताया, 'मां, सिवइयां हमने तो चखी भी नहीं। अलबत्ता हमारे कुलदेव पधारे थे। हमने बहुत मना किया, फिर भी वे बिना घी-गुड़ की सारी सिवइयां खा गए।'

मां ने पूछताछ की तो पता चला कि बच्चे कुत्ते को कुलदेव समझे थे। सिवइयां कुत्ता ही खा गया था। घर में और गेहूं नहीं थे कि दूसरी बार सिवइयां बन सकें। बुढ़िया की आंखों में आंसू उमड़ आए। जैसे ही आंसू की पहली बूंद खाली पतीली में पड़ी कि पतीली सिवइयों से भर गई। चमत्कार! दोनों बच्चे और बुढ़िया सब खुश हो गए। सबने कुलदेव का आभार मान कर असली घी और बादाम-पिस्तों वाली सिवइयां खाईं।

कलूटे काग देवा

एक था कद्दू। वह बाड़ी से निकल कर लुढ़कता हुआ टहलने को जा रहा था। तभी एक कौआ आ कर उस पर बैठ गया। वह अपनी चोंच आगे बढ़ा कर कद्दू को खाने लगा कि कद्दू बोल उठा, 'कलूटे, क्या तू अपनी गंदी चोंच धोए बिना ही मुझे खाएगा?' बात तो सही थी। कौआ चोंच धोने के लिए कुएं पर गया। फिर बोला :

कुएं कुएं कुएं रे देवा
दर पर आए हैं काग देवा
दो पानी तो धोऊं चोंच
खाऊं कद्दू जैसे हो मेवा

कुआं बोला, 'कलूटे, मेरे पास पानी की कमी नहीं है। जा, कुम्हार के घर से गगरी ले आ।' कौआ उड़ता हुआ कुम्हार के घर पहुंचा और बोला :

कर्ता कर्ता कर्ता रे देवा
दर पर आए हैं काग देवा
दो गगरी तो भर लाऊं पानी
धोऊं चोंच बिछाऊं दरी धानी
कर्ता कर्ता कर्ता रे देवा
खाऊं कद्दू जैसे हो मेवा

कुम्हार बोला, 'कलूटे, गगरी चाहिए तो फटाफट मिट्टी ले आ। मैं भी

फटाफट गगरी बना दूंगा।' कौआ उड़ता हुआ टीले पर पहुंचा और बोला :

टीले टीले टीले रे देवा
दर पर आए हैं काग देवा
दो मिट्टी तो दूं कर्ता को
बने जो गगरी भरूं मैं पानी
धोऊं चोंच बिछाऊं दरी धानी
टीले टीले टीले रे देवा
खाऊं कद्दू जैसे हो मेवा

टीले ने कहा, 'कलूटे, मिट्टी खोदने के लिए पहले किसी हिरन का सींग ले आ। फिर चाहे जितनी मिट्टी ले ले।' कौआ उड़ता हुआ हिरन के पास पहुंचा और बोला :

हिरना हिरना हिरना रे देवा
दर पर आए हैं काग देवा
दे दो सींग खोदूं मैं टीला
मिट्टी मिले तो दूं कर्ता को
बने जो गगरी भरूं मैं पानी
धोऊं चोंच बिछाऊं दरी धानी
हिरना हिरना हिना रे देवा
खाऊं कद्दू जैसे हो मेवा

हिरन ने कहा, ' कलूटे, सींग ऐसे ही कोई नहीं देता। जा कुत्ते से जा कर कह कि मुझे काटे। मैं तुरंत अपना एक सींग उतार कर दे दूंगा।' कौआ उड़ता हुआ कुत्ते के पास पहुंचा और बोला :

कुत्ते कुत्ते कुत्ते रे देवा
दर पर आए हैं काग देवा
काटो हिरन को कांपे बदन
देगा सींग खोदूं मैं टीला
मिट्टी मिले तो दूं कर्ता को
बने जो गगरी भरूं मैं पानी
धोऊं चोंच बिछाऊं दरी धानी
कुत्ते कुत्ते कुत्ते रे देवा
खाऊं कद्दू जैसे हो मेवा

कुत्ते ने कहा, 'कलूटे, मुझे भूख लगी है। तू कहीं से दूध ले आ। दूध पी कर मैं उसे ऐसा काटूंगा कि वह एक के बजाय अपने दोनों सींग तुझे दे देगा।' वहां से कौआ ग्वाले के पास पहुंचा और बोला :

ग्वाले ग्वाले ग्वाले रे देवा
दर पर आए हैं काग देवा
दे दो दूध पिलाऊं कुत्ते को
काटे हिरन को कांपे बदन
देगा सींग खोदूं मैं टीला
मिले जो मिट्टी दूं कर्ता को
बने जो गगरी भरूं मैं पानी
धोऊं चोंच बिछाऊं दरी धानी
ग्वाले ग्वाले ग्वाले रे देवा
खाऊं कद्दू जैसे हो मेवा

ग्वाले ने कहा, 'कलूटे, पहले घास फिर दूध। जा, मेरी गाय के लिए हरी-हरी घास ले आ और ताजा-ताजा दूध ले जा।' यह सुन कर कौआ जंगल में गया और आवाज दी :

जंगल जंगल जंगल रे देवा
दर पर आए हैं काग देवा
मिलेगी घास तो बनेगी बात
गाय देगी दूध तो पिएगा कुत्ता
काटे हिरन को कांपे बदन
देगा सींग खोदूं मैं टीला
मिले जो मिट्टी दूं कर्ता को
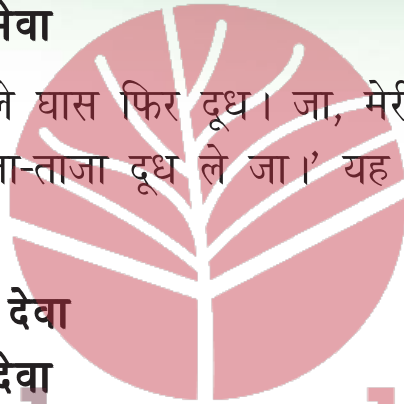
बने जो गगरी भरूं मैं पानी
धोऊं चोंच बिछाऊं दरी धानी
जंगल जंगल जंगल रे देवा
खाऊं कद्दू जैसे हो मेवा

जंगल ने कहा, 'कलूटे, लोग तो बिना पूछे ही घास काट ले जाते हैं। तूने पूछा। मैं गद्गद हूं। ले जा। जितना चाहे उतना ले जा।' कौए ने तुरंत घास काट गाय को डाली। गाय ने दूध दिया। वह उसने कुत्ते को पिलाया। कुत्ता हिरन को काटने दौड़ा। मारे डर के हिरन ने उसी पल अपना सींग उतार कर कौए को दे दिया। कौए ने सींग से मिट्टी खोदी। वह उसने कुम्हार को दी। कुम्हार ने सुंदर-सी गगरी बनाई। गगरी ले कर वह कुएं पर पहुंचा। पानी भर अपनी चोंच धोई और चटखारे लेते हुए कद्दू खा गया।
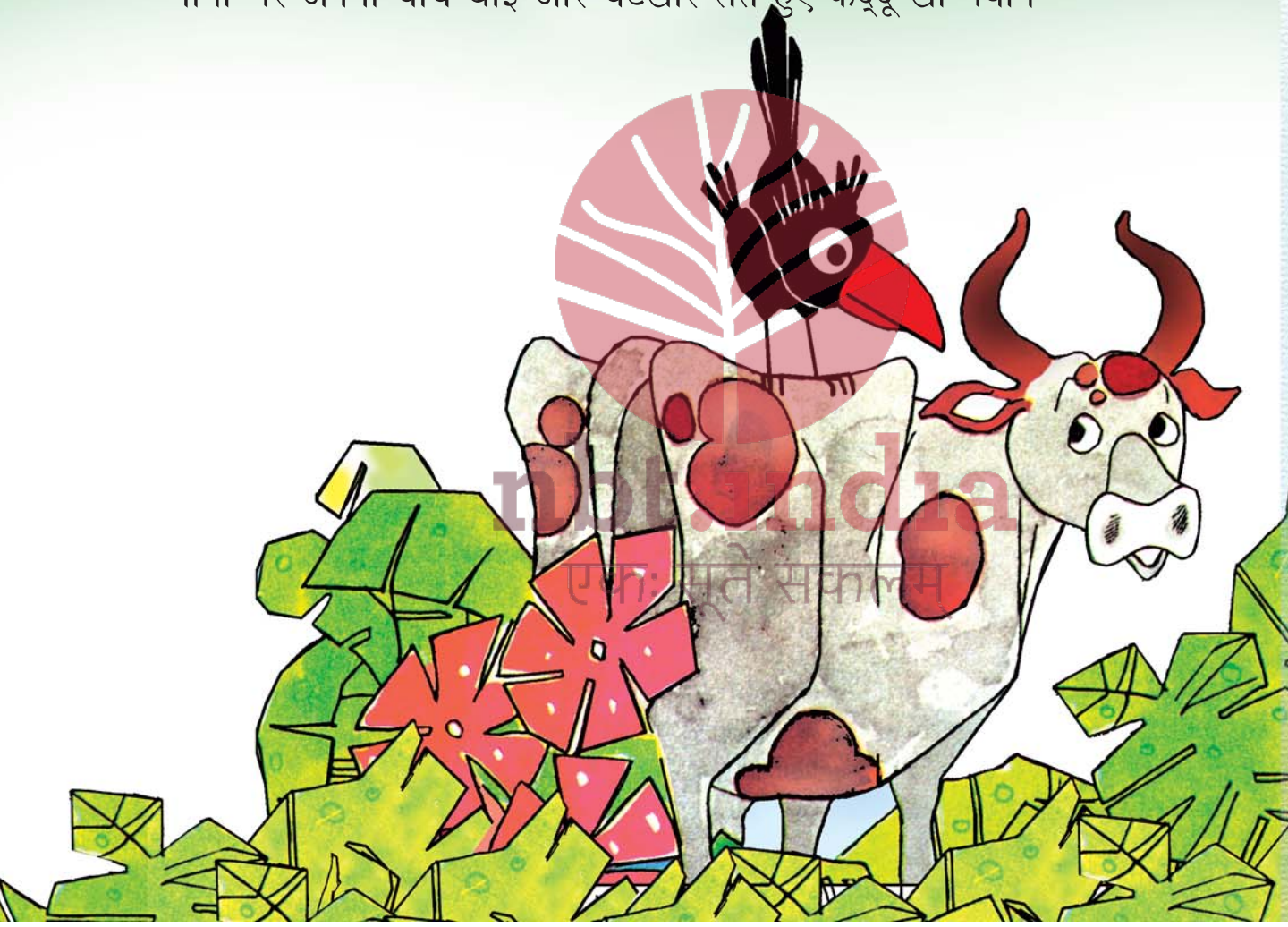
सुनहरे बालों वाली लड़की

एक थी राजकुमारी। नाम था कंचन। उसके बाल सुनहरे थे। दिखने में वह रूप की रानी लगती थी। एक रोज वह नदी पर नहाने गई। सिर धोते समय उसके सिर के दो-तीन बाल झड़ गए। थोड़ी देर बाद राजकुमार यानी कंचन का भाई अपने घोड़े को पानी पिलाने वहीं पहुंचा। उसने सुनहरे बाल देखे। सुंदर सोने को बारीक तार जैसे बाल! उसका अंग-अंग झनझना उठा। उसने सौगंध ली कि ब्याह करूंगा तो इस सुनहरे बालों वाली लड़की से वरना जिंदगी-भर कुंवारा रहूंगा।

वह राजमहल लौटा, लेकिन अपने कमरे में न जा कर सीधा घुड़साल गया और खाट बिछा कर वहीं औंधे मुंह लेट गया। भोजन का समय हुआ, तो चारों ओर राजकुमार की खोज शुरू हुई। साईस ने बताया, 'कुंवरजी तो सुबह से रूठ कर घुड़साल में सोए हुए हैं।' सुन कर सब घुड़साल पहुंचे और राजकुमार से उसकी नाराजगी का कारण पूछा। उसने कोई जवाब नहीं दिया। आखिर राजा-रानी दोनों उसे मनाने आए। तब वह बोला, 'मैं सुनहरे बालों वाली लड़की से ब्याह करना चाहता हूं।'

राजा ने वैसी लड़की की खोज सारे देश में करवाई, लेकिन नहीं मिली। उसने कहा, 'कुंवर, इस संसार में सुनहरे बालों वाली लड़की सिर्फ एक है और वह है तुम्हारी बहन कंचन।' पगला राजकुमार बोला, 'तो मैं उसी से ब्याह करूंगा।' सबने राजकुमार को बहुत समझाया, पर वह टस-से-मस नहीं हुआ। आखिर राजा ने उसके ब्याह की तिथि तय कर दी और

तैयारियां भी शुरू हो गईं।

कंचन को इस बात का पता चला तो वह रूठ कर बरगद के एक पेड़ पर चढ़ गई। जब दासी उसके हाथों में मेंहदी लगाने आई तो उसने साफ सुना दिया, 'तुम सबकी मति मारी गई है। मैं कभी भी अपने भाई से ब्याह नहीं करूंगी। किसी ने ज्यादा जिद की तो इस बरगद के साथ आकाश के उस पार चली जाऊंगी।' थोड़ी देर में तो सभी कंचन को मनाने पेड़ तले पहुंच गए। सबने पहले मां ने मिन्नत की :

उतरो न मोरी कंचन गोरी
तोरणों पर धूल चढ़ रही है
गुलाब की शैया मुरझा रही है
हरी चूड़ियों पर गर्द छा रही है
पंडित बैठे बाट जोह रहे हैं
शुभ की घड़ी बीती जा रही है
उतरो न प्यारी कंचन गोरी

कंचन ने पेड़ पर से ही जवाब दिया :

नहीं उतरूंगी मैं नहीं उतरूंगी
आज तो तू है मेरी सगी मां
कल बन जाएगी सास मेरी
उठ रे बरगद तू उठता चल

यह सुन कर पेड़ जमीन से हाथ भर ऊपर उठ गया। अब कंचन को मनाने के लिए

उसके पिता यानी राजा आए। वे बोले :

उतरो न मोरी कंचन गोरी
तोरणों पर धूल चढ़ रही है
गुलाब की शैया मुरझा रही है
हरी चूड़ियों पर गर्द छा रही है
पंडित बैठे बाट जोह रहे हैं
शुभ की घड़ी बीती जा रही है
उतरो न प्यारी कंचन गोरी

कंचन ने पेड़ पर से ही जवाब दिया :

नहीं उतरूंगी मैं नहीं उतरूंगी
आज तो आप हैं मेरे सगे पिता
कल बन जाएंगे मेरे ससुरजी
उठ रे बरगद तू उठता चल

यह सुन कर बरगद दस हाथ ऊंचा उठ गया। अब कंचन को मनाने उसकी बहन आई। वह बोली :

उतरो न मोरी कंचन गोरी
तोरणों पर धूल चढ़ रही है
गुलाब की शैया मुरझा रही है
हरी चूड़ियों पर गर्द छा रही है
पंडित बैठे बाट जोह रहे हैं
शुभ की घड़ी बीती जा रही है
उतरो न प्यारी कंचन गोरी

कंचन ने पेड़ पर से ही जवाब दिया :

नहीं उतरूंगी मैं नहीं उतरूंगी
आज तो तुम हो मेरी सगी बहन
कल बन जाओगी मेरी ननदजी
उठ रे बरगद तू उठता चल

यह सुन कर बरगद बीस हाथ और ऊंचा उठ गया। अब आगे आने की बारी थी पगले राजकुमार की। हाथ जोड़ कर उसने प्रार्थना की :

उतरो न मोरी कंचन गोरी
तोरणों पर धूल चढ़ रही है
गुलाब की शैया मुरझा रही है
हरी चूड़ियों पर गर्द छा रही है
पंडित बैठे बाट जोह रहे हैं
शुभ की घड़ी बीती जा रही है
उतरो न प्यारी कंचन गोरी

कंचन ने पेड़ से ही जवाब दिया :

नहीं उतरूंगी मैं नहीं उतरूंगी
आज तो तुम हो मेरे राखी भैया
कल बन जाओगे मेरे दुल्हे मियां
उठ रे बरगद तू उठता चल

और पेड़ ऊपर की ओर उठता चला गया। नीचे खड़े लोग दंग हो कर देखते रहे। पेड़ आकाश के उस पार स्वर्गलोक में पहुंचा तो ईश्वर ने कंचन का हाथ थाम उसे अपनी गोद में बिठा लिया।

राजा का बैंड बाजा

एक था राजा, बजाता था बैंड बाजा
उसने बसाए तीन गांव—
दो उजाड़ और एक में बस्ती नहीं।
उसमें बसे तीन कुम्हार—
दो आलसी और एक में दम नहीं।
उसने बनाए तीन भगोने—
दो टूटे हुए और एक में तला नहीं।

एक थी रानी, पीती थी वह मीठा पानी।
उसने बुलाए तीन पंडित—
दो उपवासी और तीसरे को दांत नहीं।
उनको मिलीं दो तीन अशरफियां।
दो खोटी और तीसरी में सोना नहीं—
वे अशरफियां ले गए तीन सुनार
दो अंधे और तीसरे को दीदे नहीं।
यह किस्सा सुना बच्चों ने—
दो भूल गए और तीसरे को दिमाग नहीं।

आगे पढ़िए भाग – 10

शिक्षक भाई-बहनों से

लीजिए, ये हैं बाल-कथाएं। आप बच्चों को इन्हें सुनाइए। बच्चे इनको खुशी-खुशी और बार-बार सुनेंगे। आप इन्हें रसीले ढंग से कहिए, कहानी सुनाने के लहजे से कहिए। कहानी भी ऐसी चुनें, जो बच्चों की उम्र से मेल खाती हो। भैया मेरे, एक काम आप कभी न करना। ये कहानियां आप बच्चों को रटाना नहीं। बल्कि, पहले आप खुद अनुभव करें कि ये कहानियां जादू की छड़ी-सी हैं।

यदि आपको बच्चों के साथ प्यार का रिश्ता जोड़ना है तो उसकी नींव कहानी से डालें। यदि आपको बच्चों का प्यार पाना है तो कहानी भी एक जरिया है। पंडित बन कर कभी कहानी नहीं सुनाना। कील की तरह बोध ठोकने की कोशिश नहीं करना। कभी थोपना भी नहीं। यह तो बहती गंगा है। इसमें पहले आप डुबकी लगाएं, फिर बच्चों को भी नहलाएं।

गिजुभाई